झूठ का अश्वमेध यज्ञ / विष्णु नागर

आप तो झूठ के अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा छोड़ ही दीजिए अब
साले को कोड़े मार- मारकर इतना दौड़ाइए कि
उसे बुलेट ट्रेन बनाकर छोड़िए
जब तक उसकी टें न बोल जाए
उसका राम नाम सत्य न हो जाए
तब तक आराम- विश्राम कुछ नहीं

आप तो झूठ इतना बोलिए, इतना बोलिए कि
सत्य देशद्रोही सिद्ध हो जाए
खुद ब खुद पाकिस्तान चला जाए

इतने आत्मविश्वास से बोलिए झूठ
कि उतने से बापड़ा सच तो बोला ही नहीं जा सकता

मैं व्यंग्य नहीं बोल रहा, कविता नहीं कर रहा
जब तक हम हरामखोरों के कान न फट जाएँ
दीदे फटे के फटे न रह जाएँ
दनादन झूठ की ए के-47 चलाइए

आप हैं तो देश है, देश है तो हम हैं
हम हैं तो क्या गम है

आपका झूठ तो गंगा जैसा पवित्र
गाय का दूध, उसका गोबर, उसका मूत्र
आपके झूठ की महिमा अपरंपार
आपका झूठ जिंदाबाद,आपका झूठ अमर रहे
जो इस झूठ से टकराएगा, चूर- चूर हो जाएगा
इस झूठ को हमारा
जय हिंद
जय भारत
वंदेमातरम।

नया गोदान / कृष्ण कल्पित

पशुओं के मेले के लिये विख्यात नागौर जिले के परबतसर गाँव में पदमाराम नामक एक गरीब जाट रहता था.

उसके पास दो-बीघा बंजर धरती का एक दर्रा था जिसमें वह बाजरा बो लिया करता था जिससे उसके परिवार-भर के खाने के लिये अनाज हो जाता था लेकिन उसके पास थारपारकर नस्ल की एक गाय थी जो चालीस सेर दूध देती थी यह गाय उसे उसके बाडमेर के समधी दुलाराम ने बेटे के ब्याह में दहेज में दी थी.

इस तरह पदमाराम को दूध दही घी छाछ की कोई कमी नहीं थी बचा हुआ दूध और छाछ वह गाँव में बाँट देता था उस समय तक इन तरल-पदार्थों को बेचने की प्रथा शुरू नहीं हुई थी.

गाँव के एकमात्र मंदिर के एकमात्र पुजारी सांवरमल को भी पदमाराम हर रोज एक बड़ा पीतल का लोटा भरकर दूध भेजता था.

हरी हरी चरी हुई थारपारकर गाय के दूध का स्वाद जिसने पिया है वही जान सकता है उसका वर्णन असम्भव है.

वह धारोष्ण धवल धार.

पुजारी सांवरमल के मन में खोट आ गया उसने सोचा कि पदमाराम का बाप मरणासन्न है - जब मरेगा तो थारपारकर का गोदान करवा लूँगा.

ईश्वर ने अपने पूरे कार्यकाल में सांवरमल की प्रथम प्रार्थना सुनी और पदमाराम का बाप काल-कवलित हो गया और उसको मूंज की खाट से उतारकर धरती पर सुला दिया गया.

संस्कार के लिये पुजारी को बुलाया गया.

-यजमान, अब तू अपने पिता के नाम से गोदान कर, पुजारी ने कहा.

-मेरे पास यह अकेली गाय है नहीं दूंगा यह कहकर पदमाराम ने पुजारी की तरह सौ का नोट बढ़ाया.

-क्या बाप रोज-रोज मरता है ऐसी गाय दान करो जो दूध देती हो जवान हो हर तरह से उत्तम हो, पुजारी ने दबाव बनाया.

पदमाराम ने फिर इंकार में सर हिलाया और एक और सौ का नोट पुजारी को बढ़ाया.

-इस तरह वैतरणी पार नहीं होगी, पुजारी बोला. गाँव के तमाम लोग सारे कुटुम्बी इकट्ठा थे और धरती पर बाप मरा पड़ा था. आखिरकार पदमाराम को दिल मसोसकर अपनी थारपारकर गाय और बछड़ा पुजारी के हवाले करने पड़े.

तेरह दिन में ही बाजरे के सूखे रोट खाकर पदमाराम के बच्चों की हालत खराब हो गयी.

जब बच्चों की रूखी-सूखी आँखें पदमाराम से नहीं देखीं गयीं तो चौदहवें दिन पदमाराम सांवरमल पुजारी के घर पहुंच गया देखा कि पण्डताइन उसकी थारपारकर को दुह रही थी और पुजारी दूध से भरी बटलोई रसोई में रखने जा रहा था.

-पंडत इधर आ, पदमाराम ने कहा.

-दूध की बटलोई रख कर आता हूँ.

-नहीं, उसके साथ ही आ.

पुजारी ने बटलोई पदमाराम के सामने रखी और बोला - बोल पदमाराम, कैसे आये ?

-तुमने गाय किसलिये ली थी, पदमाराम का सवाल था.

-तुम्हारे बाप को वैतरणी पार कराने के लिये, सांवरमल ने जवाब दिया.

-लेकिन गाय तो तेरे घर बंधी हुई है. मेरा बाप तो वैतरणी में बह-बह के डूब गया होगा, और यह बता कि वैतरणी परबतसर से कितनी दूर है ?

-कोई तीस करोड़ कोस दूर है, पुजारी ने उत्तर दिया.

-कोई पोस्टकार्ड आया हो तो दिखा के मेरे बापू ने वैतरणी आराम से पार करली, पदमाराम ने फिर पूछा.

-हमारे पास गरुड़-पुराण है. यही हमारा प्रमाण है. हम पोस्टकार्ड को प्रमाण नहीं मानते.

-और हम पोस्टकार्ड को प्रमाण मानते हैं. जिस दिन पोस्टकार्ड आये, बता देना, उसी दिन थारपारकर को वापस इसी खूंटे से बाँध जाऊँगा, यह कहकर पदमाराम अपनी गाय और बछड़े को खोलकर घर ले गया और साथ में दूध की बटलोई भी.

इन दिनों पुजारी सांवरमल हर रो ? पोस्टमेन की प्रतीक्षा में बैठा रहता है और हर रो ? उससे पूछता है -

कोई पोस्टकार्ड आया क्या ?

एक ढूंढो दस मोदी घोटाले मिलेंगे.....

पेज पांच का शेष

11. यहां यह प्रश्न करना भी लाजमी है कि जब भारत में बी ई एल,बी ई एम एल,बी एच ई एल जैसी रक्षा क्षेत्र की सरकारी कंपनी विधमान हैं तो बार भारत की तरफ से अनिल अंबानी की कंपनी को विभिन्न अंतराष्ट्रीय करारों के लिए आगे करने का क्या अर्थ है ?

12. डसॉल्ट रिलायंस एयरोस्पेस जो इस समझोते के बाद नई कंपनी बनी है उसका प्रोडक्शन उस ऑफसेट क्लॉज का हिस्सा है जो डील भारत और फ्रांस ने साइन की है जिसमें कहा गया है फ्रांस की यह कंपनी भारत में कुछ हिस्सा निवेश करेगी। सीधा अर्थ ये की उस ऑफसेट क्लॉज में दर्ज कंडिशन का सीधा फायदा रिलायंस को दिया गया था यह ऐसे ही है जैसे बिना किसी इंफ्रास्ट्रक्चर के जियो इंस्टीट्यूट(मुकेश अंबानी) को भारत के बेहतरीन संस्थानों में शामिल कर लिया गया था ऐसे ही अनिल अंबानी की कंपनी को जिसे की रक्षा के क्षेत्र में सुई बनाने का अनुभव भी नहीं था उसे दुनिया की बेहतरीन कंपनी ने राफेल के कलपुर्जे बनाने का काम दे दिया।

13. अब दूसरा तथ्य देखिए डसॉल्ट फाल्कन को फाइटर जेट की तकनीकी सहायता थेल्स उपलब्ध करवाता है, फाल्कन के लिए राफेल बनाने में थेल्स अहम भूमिका निभाता है अब इसी थैल्स ने 21 जून 2017 को एक ज्वाइंट वेंचर रिलायंस डिफेंस के साथ बनाया, ये ज्वाइंट वेंचर भी उसी ऑफसेट क्लॉज का हिस्सा है जो भारत और फ्रांस ने राफेल डील में साइन किए हैं।

14.यहां कुछ अन्य तथ्य पर भी गौर करें, ये सारे कंपोनेंट जहां बनेंगे उसके लिए जमीन नागपुर में फडणवीस की सरकार ने 10 सप्ताह से भी कम समय में उपलब्ध करवा दी, मतलब ये कि जहां निर्माण का एक पत्थर भी नहीं लगा था उस रिलायंस डिफेंस के साथ डसॉल्ट फाल्कन और थेल्स जैसी नामी गिरामी कंपनियों ने हजारों करोड़ के समझोते कर लिए, जबकि ये डील ॥रु को मिलनी चाहिए थी जिसे रखा क्षेत्र में बड़ा अनुभव है।

**** ज़रा देखें अनिल अंबानी कौन हैं

15. अनिल अंबानी की विश्वसनीयता पर गौर करते हैं रिलायंस कम्युनिकेशन और रिलायंस पावर सहित अनिल अंबानी ग्रुप पर 1 लाख करोड़ से ऊपर का कर्ज है जिसमें से 45000 करोड़ का जो कर्ज रिलायंस कम्युनिकेशन को दिया गया था वह कर्ज लगभग डूब चुका है कम्युनिकेशन का शेयर जो 1000 रु हुआ करता था 12 रु पर है वहीं कभी 450 रु बिकने वाला रिलायंस पावर 32 रु पर है और रिलायंस नेवल का शेयर भी 12 रू पर कारोबार कर रहा है।

16. अनिल अंबानी पर कॉर्पोरेट गवर्नेंस के सवालों से लेकर 2 जी में संलिप्तता के आरोप भी लगते रहे है।

17. ऐसी स्थिति में विदेश यात्राओं के दौरान लगातार अनिल अंबानी को साथ ले जाना,और जिन देशों से भारत रक्षा के क्षेत्र में समझौता कर रहा हैं उन देशों की अंतराष्ट्रीय रक्षा समझौते में सम्बद्ध कंपनी के साथ अनिल अंबानी की कंपनियों के समझौते स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि मोदी जी ने रिश्वत के रूप में अपने नाकारा मित्र के लिए रक्षा सम्बन्धी सौदे दिलवाए।

18. मोदी ने अपने चुनाव पूर्व के वादे कि वे रक्षा सौदों से बिचोलिये की अवधारणा को समाप्त कर देंगे की दिशा में कदम तो उठाया परन्तु वे स्वयं इस प्रक्रिया में भागीदारी और बिचोलिए की भूमिका के लिए अड़ गए।

19. इसका सबसे बड़ा फायदा विदेशी मुल्कों को हुआ, उन्हें बिचोलिये के द्वारा सौदों में होने वाली देरी से निजात मिल गयी।

20. इस प्रक्रिया में सबसे बड़ा नुक़सान देश का हुआ, अगर ये सौदे देश के संविधान द्वारा निर्धारित तय प्रक्रिया द्वारा दिए जाते तो ये देश की किसी सक्षम कंपनी को ही मिलते, देश की तकनीकी उन्नति भी होती और देश को रोजगार भी मिलता, परन्तु रिलायंस नेवल जैसी शून्य कंपनी को ये सौदे दिलवा कर देश के लिए सारी संभावनाओं को भी शून्य कर दिया गया।

आज के इस उत्तर सत्य युग में जहां सत्य के ऊपर आभासी या काल्पनिक आवरण चढ़ा दिया जाता है वहां विभिन्न मसलों पर तथ्यात्मक परख ,तार्किक विवेचन के माध्यम से उत्तर सत्य युग के वाहक कॉर्पोरेट सत्ता गठभन्धन को बेनकाब किया जा सकता है, यकीनन ।

साधू के परिजनों ने पुलिसिया मुठभेड़ में मारे गए लोगों को बताया बेगुनाह

राजनीतिक दबाव में एसएसपी अजय साहनी ने उछाला लाइव मुठभेड़ का शिगूफा जिससे कि घटना पर न उठे सवाल

27 सितम्बर 2018, अलीगढ़

रिहाई मंच और एमयू छात्र नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने अलीगढ़ के अतरौली में मुठभेड़ के नाम पर 20 सितंबर को पुलिस द्वारा हत्या किए गए मुस्तकीम और नौशाद के परिजनों से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने सफेदापुर में हत्या किए गए साधू और इस मामले में गिरफ्तार किये गए डॉ यासीन और इरफान के परिजनों से भी मुलाकात की।

मंच ने कहा कि साधू रूप सिंह के भाई गिरिराज सिंह ने न सिर्फ हत्या पर सवाल उठाए बल्कि उनके भाई की हत्या के नाम पर हुई पुलिसिया मुठभेड़ पर भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि पुलिस हत्या का जो समय बता रही है उस समय उनके बड़े भाई बाबा जी से मिलकर आये थे। वहीं मुठभेड़ में मारने के पुलिसिया दावे पर उन्होंने कहा कि आज तक पुलिस ने मोबाइल और बैग की बरामदगी नहीं की है और वे लोग क्यों मारेंगे वो बेगुनाह हैं।

उन्होंने कहा कि गांव के लोगों की संलिप्तता के बगैर यह घटना नहीं हो सकती। वे बताते हैं कि इसके पहले भी कई बार मंदिर में चोरी हो चुकी है। एक बार 35 हजार रुपए खाना बनाने का बर्तन, एक बार 60 हजार रुपए, मंदिर का एम्प्लीफायर और अबकी बार 90 हजार रुपए के करीब। सुबह जब बड़े भाई दूध लेकर पहुंचे तो देखा कि बाबा की हत्या हो गई थी। हालत को देखते हुए उन्हें लगता है कि चोर मंदिर में घुसे और बाबा जाग गए। पहचान लिए जाने के डर से चोरों ने उनकी हत्या कर दी और ट्यूबल पर पहुंचे होंगे। उसी दौरान जंगली सूअर को भगाने के लिए दवा डालने गए दंपत्ति की टार्च उन पर पड़ गई। इस बार भी उन्होंने पहचान लिए जाने के डर से दंपत्ति की हत्या कर दी होगी। इससे लगता है कि वे गांव के ही रहे होंगे।

जब वे मामले को लेकर पुलिस के पास गए तो पुलिस ने उन्हें एक वीडियो दिखाया जिसमें एक व्यक्ति कह रहा है कि उसने बाबा को मारा और अंतिम गाड़ी पकड़कर चला गया। अंतिम गाड़ी 8 बजे की है। ऐसे में यह कैसे हो सकता है जब कि मेरे बड़े भाई 8 बजे बाबा से मिलकर आए थे।

प्रतिनिधिमंडल ने अतरौली के नई बस्ती भैंसपाड़ा में तथाकथित पुलिस मुठभेड़ में मारे गये मुस्तकीम और नौशाद के परिजनो से मुलाकात की। मुस्तकीम की माँ शबाना ने बताया कि उनके बच्चे निर्दोष थे। 16 सितंबर को ही पुलिस उन्हें उठाकर ले गई थी। पुलिस जब मारते-पीटते ले जा रही थी तो दोनों कह रहे थे कि हमारा क्या गुनाह है। मुस्तकीम ने भागने की कोशिश की तो उसे और बेरहमी से पुलिस वालों ने पीटा। उस रात और उसके बाद मंगलवार को पुलिस आई और उनके फरार होने की बात कही। इस पर उन्होंने कहा कि जब पुलिस उसे ले गई थी तो वो फरार कैसे हो गए।

मुस्तकीम के भाई सलमान को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया है। शबाना ने आगे बताया कि उसी दिन से उनके पति इरफान का भी कोई अता-पता नहीं है। नौशाद की माँ शाहीन ने बताया कि बच्चों को मारने के बाद पुलिस वाले उनके साथ रफीकन और शबाना को थाने ले गए थे। बड़े अफसरों की मौजूदगी में उनसे सादे और लिखे कागजों पर अंगूठा लगवाया और देर रात छोड़ दिया गया। उनके बच्चे और बहू घर में अकेले थे और पुलिस वहां कमरे तक में घुसी हुई थी और किसी को आने-जाने नहीं दिया जा रहा था। घर पर केवल महिला और बच्चों के होने के बावजूद महिला पुलिस नहीं थी।

अब 24 घंटे पुरुष पुलिसवाले उनके घर पर मौजूद रहते हैं। उन्होंने बार-बार इस बात को कहा कि उन्हें पुलिस पूछताछ के नाम पर लगातार परेशान कर रही है और उन्हें घर के बाहर नहीं जाने दिया जा रहा है। पुलिस लगातार भय का माहौल बनाए हुए है। वहीं पहले से ही गरीबी की मार झेल रहे परिवार पर पुलिसिया दहशत का साया है। उन्हें भूखे पेट रहना पड़ रहा है। उनके छोटे-छोटे बच्चे हैं और मुस्तकीम की मां, दादी और मुस्तकीम की पत्नी है। उन्हें अंदेशा है कि जिस तरह से मानसिक रुप से विक्षिप्त नफीस को पुलिस ने हिरासत में रखा है कहीं नौशाद के पिता इरफान को भी पुलिस हिरासत में न रखा गया हो। ऐसे में उनका परिवार मोहल्ले वालों की मदद पर ही निर्भर है। मृतकों के परिवार ने इस मामले में इंसाफ की गुहार लगाई है और निष्पक्ष जांच की मांग की है।

प्रतिनिधि मंडल ने डाक्टर यासीन और इरफान के परिवार से भी मुलाकात की। डॉ यासीन और इरफान को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया है। डॉक्टर यासीन के परिवार में उनकी से मुलाकात के दौरान लगातार वर्दी और सादी वर्दी में पुलिसकर्मी न सिर्फ वहां उपस्थित रहे बल्कि बातचीत के विषय में पूछताछ की। उनको बताया गया कि घटना और मुकदमें के बारे में बातचीत की गई।

पुलिसकर्मियों से वहाँ उनकी उपस्थिति के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि साहब के आदेश पर हैं। परिजनों ने बताया कि उनके बच्चों के मारे जाने के बाद से ही वहां पुलिस है। ध्यान रहे कि पुलिस के मुठभेड़ के दावे के बाद परिजन मीडिया के सामने आए थे और उन्होंने उनको पहले से पुलिस द्वारा उठाकर ले जाने और मुठभेड़ के नाम पर मारने का आरोप लगाते हुए इंसाफ की मांग की थी। जिसके बाद लगातार इस मुठभेड़ में घटना स्थल पर मौजूद रहे एसएसपी अजय साहनी ने भी मुठभेड़ को सही और मारे गए लोगों के कथित आपराधिक रिकार्ड जिसमें कुछ उन्हें मुठभेड़ के बाद मिले को भी मीडिया के सामने प्रस्तुत किया था।

मुस्तकीम और नौशाद के परिजन जहां रहते हैं वहां पुलिस की तैनाती सवाल उठाती है कि क्या उनकी सुरक्षा के लिए उन्हें तैनात किया गया है। अगर ऐसा है तो घर में सिर्फ महिलाएं हैं पर वहां कोई भी महिला पुलिसकर्मी नहीं थी। वहीं घटना के बाद घर की महिलाओं को जब थाने में सुबह से देर रात तक रखा गया था जिसपर सवाल उठाने पर अलीगढ़ की सामाजिक कार्यकर्ता मारिया आलम की गाड़ी पुलिस ने सीज कर दी तो उन्होंने इस बात की भी शिकायत की कि जब पुलिस घर की बुजुर्ग महिलाओं को थाने में बैठाई थी तो उस दरम्यान एक कमरे के घर में जिसमें उनकी बहू-बेटियां-बच्चे थे उसी में पुरुष पुलिसकर्मी भी घुसे थे। बाहरी दुनिया से उनको काट दिया गया है। इसके चलते गरीब पृष्ठभूमि के इस परिवार को रोटी के लाले पड़ गए हैं। स्थानीय मीडिया में भी खबरें आईं कि बच्चों को भूखे पेट तक सोना पड़ा है।